International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 26-04-2019; Accepted: 29-05-2019
www.socialsciencejournal.in
Volume 5; Issue 4; July 2019; Page No. 159-161

सुस्थिर विकास में शिक्षा एवं गैर-सरकारी संगठनों का योगदान

डॉ. विचारी लाल मीना
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्रविभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, (मानित विश्वविद्यालय), कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली, भारत

प्रस्तावना

सतत् विकास एक प्रकार से समाज, पर्यावरण तथा अर्थव्यवस्था का संतुलित एकीकरण हैं। सतत् विकास इस तरह से होता है कि यह व्यापक संभावित क्षेत्रों, देशों और यहाँ तक की आने वाली पीढ़ियों को भी लाभ पहुँचाता है। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो हमे निर्णय करते समय समाज, पर्यावरण तथा अर्थव्यवस्था पर उसके संभावित प्रभावों का विचार कर लेना चाहिए कि हमारे निर्णय एवं कार्य दूसरों को प्रभावित करते हैं तथा हमारे कार्यों का भविष्य पर भी प्रभाव पड़ता हैं। आर्थिक और औद्योगिक विकास इस तरह से होने चाहिए जिससे पर्यावरण को कोई भी ऐसी क्षति न हो जिसकी भरपाई न की जा सके।

संक्षेप में सतत् विकास ऐसा विकास है जो आने वाली पीढ़ियों के हितो से समझौता किये बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करता हैं।

यह परिभाषा दो महत्त्वपूर्ण बातों को उजागर करती है- पहली, प्राकृतिक संसाधन न केवल हमारे जीविकोपार्जन के लिए जरुरी हैं, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के जीविकोपार्जन के लिए भी उतने ही आवश्यक हैं। दूसरी, वर्तमान में किसी भी प्रकार के विकास-संबंधी कार्यों को करते समय उसके भविष्य में आने वाले परिणामों को ध्यान में रखना आवश्यक हैं। संक्षेप में इस परिभाषा में 'आवश्यकता' और 'भावी पीढ़ियाँ' दो महत्त्वपूर्ण अवधारणाएँ हैं।

सतत् विकास की संकल्पना

सतत् विकास की संकल्पना का वास्तविक विकास 1987 में ''हमारा साझा भविष्य'' (Our Common Future) नामक रिपोर्ट, जिसे 'द ब्रंटलैंड रिपोर्ट' के नाम से भी जाना जाता है। इसके आने के बाद हुआ एवं तभी से इस शब्द का व्यापक रूप से प्रयोग किया जाने लगा। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा गठित आयोग ने विकास के लिए परिवर्तन हेतु वैश्विक प्रारुप का प्रस्ताव पेश किया। ब्रंटलैंड रिपोर्ट ने हमारे रहन, सहन एवं शासन में पुनर्विचार की आवश्यकता पर जोर दिया। मानवता के लक्ष्यों एवं आकांक्षाओं को प्राप्त करने के लिए पुरानी समस्याओं पर नए तरीके से विचार करने तथा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एवं समन्वय पर बल दिया। इस आयोग का औपचारिक नाम 'पर्यावरण एवं विकास पर विश्व आयोग' था। इसने मानव पर्यावरण एवं प्राकृतिक संसाधनों के क्षय एवं खराब होती स्थिति तथा सामाजिक आर्थिक विकास के लिए उस क्षय के परिणाम की और ध्यान आकृष्ट किया था। आयोग की स्थापना करते समय संयुक्त राष्ट्र महासभा ने विशिष्ट रूप से दो विचारों की ओर ध्यान आकृष्ट किया था।

- पर्यावरण,अर्थव्यवस्था तथा लोगों की भलाई अत्यधिक अन्तर्संबन्धित है।
- सतत् विकास के लिए वैश्विक स्तर पर सहयोग आवश्यक है।

सतत् विकास की संकल्पना के अंतर्गत यह माना जाता है कि अकेले आर्थिक समृद्धि पर्याप्त नहीं है किसी कार्य के आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय आयाम अन्तर्संबन्धित होते हैं। एक समय में इन तीनों में से केवल एक पर विचार करने से निर्णय में त्रूटी हो सकती है। तथा टिकाऊ परिणाम प्राप्त नहीं हो पाता है केवल लाभ पर ध्यान केन्द्रित करने से सामाजिक एवं पर्यावरणीय हानि होती है। जो दीर्घकाल में समाज को नुकसान पहुँचाती है।

सतत् विकास के उद्देश्य

सतत् विकास के अर्थ और अवधारणा से इतना तो स्पष्ट ही हो गया है कि सतत् विकास मानव के अस्तित्व की बुनियादी शर्त है। मानव पृथ्वी पर तभी तक हैं जब तक अन्य पशु-पक्षी और पेड़-पौधे हैं। स्वतंत्र रूप से हमारा पृथ्वी पर कोई अस्तित्व नहीं है। इसलिए सतत् विकास के माध्यम से निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति करनी चाहिए-

1. गरीबी निवारण एवं सतत् आजीविका
2. पर्यावरण अनुकूल मानवीय गतिविधियाँ
3. ऊर्जा दक्षता
4. प्राकृतिक और मानव निर्मित संसाधनों का संरक्षण
5. नवीकरणीय संसाधनों पर निर्भरता

सुस्थिर विकास में शिक्षा का योगदान

सभी स्तरों के लिए जैसे व्यक्तिगत, समुदायों, राष्ट्रों एवम् विश्व हेतु टिकाऊ जीवन शैली की नई पद्धति होनी चाहिये। नई पद्धति को अपनाने के लिए बहुत से लोगों के आचरण में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन की आवश्यकता है। हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि शिक्षण कार्यक्रम टिकाऊ जीवनशैली की महत्ता को परिलक्षित कर

रहे हैं। (आई.यू.सी.एन.यूनेप, डब्ल्यू.डब्ल्यू.एफ., 1991)

टिकाऊ विकास को आगे बढ़ाने एवम् पर्यावरण तथा विकास के मुद्दों को सम्बोधित करने में जनमानस की क्षमता में सुधार लाने हेतु शिक्षा विशिष्ट भूमिका निभाती है। टिकाऊ विकास के साथ पर्यावरणीय एवम् नैतिकता सम्बन्धी जागरुकता, मूल्यों एवम् अभिप्रेरण, कौशल तथा व्यवहार को पाने और निर्णायक स्तर पर प्रभावी जनसहभागीदारी के लिए शिक्षा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। (यू.एन. सी.ई.डी., 1992)

शिक्षा के द्वारा ज्ञान का प्रसार एवं व्यवहार, मूल्यों तथा जीवनशैली में वांछनीय परिवर्तन के द्वारा कौशल का विकास किया जा सकता है। निरन्तर एवम् आधारभूत परिवर्तन के लिए जनसमुदाय की भागीदारी को बढ़ाने में भी शिक्षा की अहम भूमिका रहती है और यह तभी आवश्यक है तब मानवता अपनी चाल परिवर्तित करता है और अपने पीछे उस साधारण मार्ग को छोड़ देता है जो बढ़ती हुई परेशानियों एवम् महाविपत्ति की ओर अग्रसर हो रहा है तथा टिकाऊ की ओर अपनी यात्रा आरम्भ करता है। (यूनेस्को, 1997)

कार्यवाही हेतु क्रियाएँ: इस सम्बन्ध में कार्यवाही हेतु विभिन्न क्रियाएँ इस प्रकार है-

1. सम्बन्धित केस अध्ययनों का दस्तावेजीकरण: किसी एक पर्यावरणीय मुद्दे का चयन करें। ऐसे केस अध्ययनों का दस्तावेजीकरण करें जिनमें सर्वश्रेष्ठ गतिविधियाँ, नीतियाँ, अधिनियमों, समझौतों, नागरिकों के कार्यों तथा समुदाय की पहलों और अन्य कार्यों, जिनका पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, सम्मलित हो सकते हैं।
2. विज्ञापनों का पर्यावरण पर प्रभाव: मुद्रित व दृश्य संचार माध्यमों दोनों में विभिन्न प्रकार के विज्ञापन दिखाई देते हैं। यह समझने के लिए कि इनमें से कितने विज्ञापन पर्यावरण से सम्बन्धित सूचनाओं को प्रेषित करते हैं, इन विज्ञापनों का मूल्यांकन करें।
3. पर्यावरणीय क्षरण: आप अपने क्षेत्र में महिलाओं तथा पुरुषों, डॉक्टरों और स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं का साक्षात्कार लें और उस क्षेत्र में व्याप्त बीमारियों के प्रकारों और उनके घटित होने की दर का विश्लेषण करें। इन आँकड़ों का पर्यावरणीय गुणवत्ता से सम्बन्ध स्थापित करें।
4. स्थानीय त्योहारों का अध्ययन: स्थानीय त्योहारों का अध्ययन करें। उनके धार्मिक परम्पराओं, विश्वासों को ठोस बहुँचाये बिना इन परिस्थितियों को पर्यावरण हितैषी तरीकों द्वारा हल करने के लिए रणनीति बनाये।
5. क्षेत्र में स्थापित उद्योग: अपने क्षेत्र में उपस्थित किसी उद्योग का चयन करे। उस उद्योग द्वारा निर्मित किये जाने वाले उत्पादों के साथ-साथ संसाधनों ऊर्जा का व्यय, उत्पादन प्रक्रिया में कौन-सी तकनीकें प्रयोग की जाती है? आदि के बारे में जानकारी प्राप्त की जाये।
6. अपशिष्ट प्रबन्धन पद्धतियों का अध्ययन: अपने क्षेत्र में उपस्थित किसी उद्योग का चयन करें। उस उद्योग द्वारा निर्मित किये जाने वाले उत्पाद, कच्चे माल तथा अपशिष्ट प्रबन्धन व्यवस्था के साथ-साथ अपशिष्ट में कमी लाने सम्बन्धी विधियों का अध्ययन करें।
7. पंचवर्षीय योजना का अध्ययन: टिकाऊ विकास के परिप्रेक्ष्य से हाल ही की पंचवर्षीय योजना पर एक समीक्षात्मक लेख लिखें। क्या योजना में टिकाऊ विकास के विभिन्न आयामों को सम्मिलित किया गया है? आदि।
8. गैर-सरकारी संगठन: एक गैर-सरकारी संगठन के कार्यकर्ताओं से बातचीत करें और देखें कि टिकाऊ विकास के सन्दर्भ में उनके क्या विचार हैं तथा किस प्रकार से उनके कार्यक्रम इसमें योगदान दे रहे हैं।

गैर-सरकारी संगठनों द्वारा किये जा रहे प्रयास (**Role of NGOS**)

देश भर में गैर-सरकारी संगठनों ने टिकाऊ विकास हेतु विभिन्न गतिविधियों की पहल की है। उनके द्वारा किये गये कार्य कुछ इस प्रकार है-

- पर्यावरणीय सफाई, स्वास्थ्य व स्वच्छता: इसके अन्तर्गत भिन्न कार्यक्रम किये जा रहे हैं, जैसे- प्रभावशाली नगरीय व ग्राम अपशिष्ट प्रबन्धन, इकोसेनिटेशन के लिए कम खपत वाले व पर्यावरण मित्र शौचालयों का निर्माण, गाँवों में सुरक्षित स्वास्थ्य व सफाई कार्य हेतु लोगों को प्रोत्साहित करना, कचरा जिसमें मानव मल शामिल हो, को लेकर ऊर्जा का उत्पादन करना, वर्मिकम्पोस्टिंग, प्रशिक्षण व जागरूकता।
- ग्राम्य विकास: इसमें वैकल्पिक कृषि तकनीक, एकीकृत कीट प्रबन्धन, एकीकृत पोषक तत्व प्रबन्धन, जलागम प्रबन्धन, अन्य खाद व जल संरक्षण अभ्यास जिनमें पारम्परिक जल संचयन तकनीकों की पुन: प्राप्ति टैंक व अन्य जल भण्डारण ढाँचों जैसे चेक बाँध व मिट्टी के बाँधों से कचरा हटाना शामिल है।
- वन संरक्षण: गैर-संगठनों में वन संरक्षण हेतु संयुक्त वन प्रबन्धन में सक्रिय भागीदारी की है।
- जैवविविधता संरक्षण: इस क्षेत्र में गैर-सरकारी संगठनों द्वारा किये गये कार्य इस प्रकार है- वन्यजीव, जनगणना मुख्यत: चिड़ियों की गिनती, जैवविविधता का दस्तावेजीकरण, जन जैवविविधता रजिस्टर, कैम्पिंग व प्रकृति खोज का कार्यक्रम।
- ऊर्जा संरक्षण कार्यक्रम: ऊर्जा संरक्षण हेतु एन.जी.ओ. ने नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों (जैसे- सूक्ष्म जल विद्युत, सौर ऊर्जा) एवं प्रौद्योगिकी (जैसे- बायो गैस, ईधन प्रभावी लकड़ी के चूल्हे, लकड़ी के गैसिफायर) का प्रसार किया है।
- पर्यावरण सूचना तन्त्र (एनविस): एनविस पर्यावरण की जानकारी के प्रसार हेतु फैलाया गया नेटवर्क है। पर्यावरण एवं वन मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा क्रियान्वित यह नेटवर्क भिन्न संस्थानों में अपने केन्द्रों के साथ 15 एन.जी.ओ. नेटवर्कों (20 प्रतिशत) द्वारा क्रियान्वित है।
- जागरूकता, शिक्षा व शिक्षण: कई एन.जी.ओ. पर्यावरण संबंधी विषयों पर विभिन्न कार्यक्रम चला रहे हैं। इन कार्यक्रमों में पर्यावरण मित्र उत्पादों के प्रसार हेतु विभिन्न प्रयास किये जा रहे हैं। ये कार्यक्रम अभियानों, कार्यवाहियों, नीति परिवर्तन, नीति

अनुसंधानों के रूप में होते हैं। पर्यावरणीय प्रभावकारी गतिविधियों को रोकने के लिए एन.जी.ओ. एक कार्यकर्ता या दबाव डालने वाले समूह की तरह कार्य करते हैं। वे पर्यावरणीय गतिविधियों को रोकते हैं जो पर्यावरण व गरीब लोगों के लिए क्षतिकारी होती है। उदाहरण के लिए साइलेन्ट वैली आन्दोलन, नर्मदा बचाओ आन्दोलन।

- तकनीकी सहयोग: ये सरकार द्वारा क्रियान्वित देशभर में विभिन्न कार्यक्रमों को तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए रिसोर्स एजेंसी के रूप में कार्य करते हैं।
- शोध व दस्तावेजीकरण: कुछ एन.जी.ओ. पर्यावरण के क्षेत्रों, जैसे- पर्यावरणीय अर्थव्यवस्था, पर्यावरणीय कानून, संरक्षण जीवविज्ञान व वानिकी आदि की जानकारी प्रदान कराने व शोध हेतु दस्तावेजीकरण के लिए कार्यरत है।

सन्दर्भ सूची

1. श्रीवास्तव डॉ. पंकज- पर्यावरण शिक्षा, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ
2. भटनागर ए.वी, अनुराग, नीरु, पर्यावरण शिक्षा, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ
3. ओझा शिवकुमार, पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण, बौद्धिक प्रकाशन देवनगर इलाहाबाद
4. पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी, दृष्टि पब्लिकेशन्स, मुखर्जी नगर दिल्ली।